Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अलका सरावगी कृत 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी

निरुपमा साहु*

* गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय, संबलपुर (ओडिशा) भारत

शोध सारांश – साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में अलका सरावगी एक सशक्त मिशाल है। उनमें शालीनता, सादगी, विनम्रता का संतुलन देखने को मिलता है। उनके जीवन की जो सच्चाई है, वह उनके रचनाओं। से साफ झलकता है। उन्होंने परंपरावादी उपन्यास के ढांचे को तोड़कर, उपन्यास साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की। उनका साहित्य गंभीर अध्ययन पर आधारित है। जीवन के खालीपन, अकेलापन और उससे जो संघर्ष उत्पन्न होता है, उसे उन्होंने अपने साहित्य का प्रमुख विषय बनाया है। उनकी रचनाएँ रोजमर्रा के जीवन , उनकी परेशानियों और जटिलताओं को सहज व सरल रूप में उजागर करती है। इसी कारण वे हिंदी साहित्य की एक समृद्ध लेखिका के पद पर प्रतिष्ठित हुई।

प्रस्तावना – हमारे समाज में स्त्री का जीवन हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। सदियों से वह परंपरा के बंधन में बंधी हुई, न चाहते हुए भी उससे निकल नहीं पाती। बाल्यावस्था से हो अपने रंग – रूप, व्यवहार को लेकर उसे ताने सुनने पड़ते है। उसका मासिक रूप से शोषण किया जाता है। इसके साथ–साथ लड़की होने के कारण उससे घर का कामकाज भी कराया जाता है। जब ये समाज में विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचती है, तो ये शोषण का माध्यम बन जाती है। महिलाओं पर अत्याचार, उसका शारीरिक, मानसिक रूप से शोषण, उसका अपहरण कर वेश्यावृत्ति करवाना आधुनिक समाज में ये व्यापार बन गया हैं। विवाह का वचन देकर धोखा देना, विवाह करके बाजार में बेच देना इन सब कुवृत्तियों के कारण एक स्त्री अपने ही परिवार अपने ही समाज में असुरक्षित है।

अलका सरावगी के रचनाओं में जारी जीवन से जुड़े मुद्दों का वास्तविक पक्ष हमें देखने, को मिलता है।पितृसत्तात्मक समाज के नाम पर जिस वेड़ियों से वह जकड़ी गई है, उससे उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए अलका जी आवाज उठाती है। शेष कादम्बरी उपन्यास स्त्रियों पर विचार करके चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में अनेक नारी पात्रों के माध्यम से नारी जीवन की अनेक समस्याओं को उजागर किया गया है। नारी के लिए सबसे जरूरी है अपने अस्मिता की पहचान उसकी प्रतिष्ठा करना। इस उपन्यास में यही भाव केंद्र में है।

शेष कादंबरी उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी – अलका सरावगी हिन्दी साहित्य जगत की एक बहुचर्चित लेखिका है। उनकी रचनाओं में नारी जीवन के यथार्थ पक्षों का उद्घाटन हुआ। स्वयं नारी होने के कारण उन्होंने, स्त्री जीवन की पीड़ा को महसूस किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ नारी जीवन से जुड़े मुद्दों का वास्तविक रूप में उभर पाने में सफल हुई है।

इस उपन्यास में नारी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रहा है एवं अनेक नारी पात्रों की मिली जुली झांकियां देखने को मिलती है। जैसे की रूबी दी, सविता, कादम्बरी, सायरा, कम्मो, शीला, आभा जैन, माया बोस, कल्याणी, आदि सभी पात्रों में नारी पात्रों में जीवन का मिला जुला रुप है। कुछ नारी पात्रों में परंपरागत जीवन मूल्यबोध देखने को मिलता है तो कुछेक प्रगतिशीलता एवं आधुनिक प्रश्नों को खड़ा करती है।

1. **अस्मिता और अस्तित्व के लिए संघर्ष–** आधुनिक युग में मानव दासता को हर बेड़ियों को तोड़कर एक नई स्वतंत्र जीवन चेतना को हासिल करना चाहता था। नारी समाज की आधारशिला है। वह सृजन, पालन और संवेदनशीलता का प्रतीक मानी जाती है। फिर भी इतिहास साक्षी है कि नारी को अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। अपनी एक अलग पहचान बनाना एक स्त्री के लिए पुरुष की अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण है। क्योंकि स्वतंत्रता के दौर में भी स्त्री, पितृसत्ता के सामंती रूढ़ियों और परंपराओं में जकड़ी हुई है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा, अर्थिक निर्भरता और पुरानी रूढ़ियां नारी को आगे बढ़ने से रोकती है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास में एक प्रमुख पात्र है रुबी गुप्ता। वह संपूर्ण उपन्यास में बचपन से ही अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही होती है। उनकी यह लड़ाई जीवन के अंतिम समय तक जारी है रहती है। रूबी को ग्यारह साल की उम्र में यह पता चलता है कि उसके असली माता– पिता उसके मामा–मामी है। उसके बाद वे कभी विश्वास नहीं कर सकी कि किसी को सचमुच उनकी जरूरत हो सकती है। रुबी दी जब पहली बार गुड फ्रेंड्स सोसाइटी के मिस्टर वासुदेव मणि से मिलने गई, तब पहली मुलाकात में ही वासुदेव ने समझ लिया था कि रुबी की समस्या उनके कोई न होने की समस्या है – आइडेंटिटी क्राइसिस। जब बासुमणि ने यह सलाह दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखो, तब रुबी ने कहा –'जिसे कभी दूसरों का विश्वास न मिला हो, वह कैसे अपने ऊपर विश्वास रखेगी ? आदमी का सारा आत्मविश्वास इसी चीज से आता है कि दूसरे उस पर, उसको सच्चाई पर, उसके अस्तित्व पर विश्वास करते हैं। जिस लड़की के मन में ग्यारह साल की उम्र में ही दूसरों के साथ अपने संबंधो पर दोतरफा शक कराने का बीज पड़ गया हो, वह कैसे अपने आप पर विश्वास रखेगी ?'[1]

रुबी की मां ने रुबी को समाज– परिवार के सामने अपनाने की

कोई रस्म अदा नहीं की थी। पिता की वसीयत में भी उसके लिए पाली हुई लड़की जैसे अपमानजनक शब्दों का व्यवहार किया गया है। रूबी की मां ने रूबी को कभी गोद नहीं लिया। इसलिए रूबी समझती है कि मां जब चाहे उसे मामी को सौंप देंगी। मां ने कन्यादान के समय भी झगड़ा किया। मां ने यहाँ तक कहा कि उन्हें रूबी की शादी से उन्हें कोई मतलब नहीं।

शादी के बाद भी रुबी को अपने अस्तित्व के लिए लडाई लड़नी पड़ी। उनका सारा जीवन इसी बात को लेकर बीत गया कि, उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व है ही नहीं।

2. अकेलापन से ग्रस्त जीवन – रूबी दी का पूरा जीवन अकेलेपन से ग्रस्त था। पहले अपने माता की उपेक्षा, शादी के बाद पति से उपेक्षा, बेटियों से उपेक्षा आदि अनेक घटनाएँ उन्हें अकेले जीवन को बिताने के लिए मजबूर करती है। रूबी दी को बेटियों ने कभी उन्हें मां जैसा प्रेम नहीं दिया। पति के रहते भी उन्हें अकेले ही रहना पड़ा। 'रूबी गुप्ता से ज्यादा अकेलेपन को किसने इतने लम्बे समय-साथ में जाना है- दुनिया और अपने होने की समझ के साथ-साथ उपजा ठेठ अकेलापन। एक तो रूबी अकेली संतान और उस पर मां-बाप के नि:शंक स्नेह का अभाव। रूबी महल में अवश्य रहती थी, पर उनकी माँ ने पूरे घर को भी कभी रूबी को दिखाना जरूरी नहीं समझा। कानपुर में भी जब उसे अपने असली माता-पिता के बारे में पता चला तो उसे ऐसा लगा कि वह एकदम अकेली है। रूबी गुप्ता की किसी को कोई जरूरत नहीं है। उसे कोई अपने पास में रखना चाहता। सब उससे छुटकारा पाना चाहते है।'[2]

अपने पति सुधीर की अकस्मात मृत्यु के कारण रूबी को अपने जीवन जीने की कोई वजह नहीं मिल रही थी। आत्महत्या करने जैसी कोई बात वे नहीं सोचती थी, मगर उनके मन में ऐसा आता कि अचानक किसी दुर्घटना में उनका देहांत हो जाए। 40 की उम्र के नजदीक पहुंचकर उन्हें हर पल लगने लगा था कि जीवन बहुत ज्यादा जी लिया है। किसी को उनकी कोई खास जरूरत नहीं है और उनके बिना सबका जीवन चल सकता है। रूबी दी के साथ उनके मकान में सायरा दरबान कालुचरण रहते थे।

एक दिन जब उन्हें कुछ बदला-बदला सा लग रहा था, तब वे उसे अपने मृत्यु का पूर्व संकेत समझ बैठी। वह खुश होती और कहती - कितना अच्छा होगा कि वे एक ऐसी नींद में चली जाएंगी, जिससे उठने की कोई जरूरत नहीं होगी। अपने अकेलेपन की घड़ी में वह सायरा को खुद से ज्यादा खुशनसीब समझती है, क्योंकि वह सारे दुखों से परे हैं। इस उपन्यास की एक चरित्र सविता में रूबी दी को खुद को देखती है क्योंकि सविता की जरूरत किसी को नहीं, इसलिए सविता के कष्ट की गहन अनुभूति उन्हें हो रही है।

3. ससुराल की यातना – भारतीय समाज में विवाह के बाद लड़की को मायके को छोड़कर ससुराल में जाना पड़ता है। यह नया परिवेश उसके लिए आशा, प्रेम और सम्मान का प्रतीक होना चाहिए। लेकिन कई बार यह स्थान उसके लिए पीड़ा और उत्पीडन का कारण बन जाता है। ससुराल की यातना आज भी एक गंभीर सामाजिक समस्या बनी हुई है। ये कई रुपों में हमारे सामने आती है। इसमें दहेज की मांग, मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न, अपमानजनक व्यवहार, स्वतंत्रता पर प्रतिबंध और घरेलू हिंसा शामिल है। उपन्यास की नायिका रुबी दी को भी अपने ससुराल वालों के द्वारा शोषित और यातना मिलती है।

रूबी दी को अपने ससुराल वालों से इतनी यातनाएं दी कि उसे कॉके अस्पताल (रांची) के नामी मनोचिकित्सक डॉ.डेविस के पास अपना इलाज कराने के लिए जाना पड़ा। डॉ. डेविस ने रूबी की हालत देखकर उसके पति सुधार से 'मिस्टर गुप्ता। योर वाइफ इज सोरियसली इल। यदि आपने इनका इलाज समय रहते नहीं करवाया, तो आपको कहा- एक दिन बुरी तरह पछताना पड़ेगा।'[3] इलाज के दौरान रुबी दी को कुल 16 इलेक्ट्रिक शॉक लगाए गए।

एक बार रुबी की साडी पर जेठानी के मुन्ने ने पेशाब कर दिया था। इसलिए रूबी ने अपनी साड़ी बदल दी। इससे उसकी सौतेली सांस ने कहा - 'सतपीढ़िया शाह की लड़की है। चार-चार घंटे पर साड़ी नहीं बदलेगी, तो भला और कौन बदलेगा ?'[4] यह सुनने के बाद रूबी दी को पहली बार अहसास हुआ था कि सतपीढ़िया शाह लड़की होना किसी गुनाह से कम नहीं। रुबी को इतनी बातें इसलिए सुननी पड़ी पड़ती थी, क्योंकि सतपीढिया शाह ने मन मुताबिक दहेज दिए बिना लड़की को ससुराल विदा कर दिया हो। शादी के जोड़े में गृहप्रवेश करते हुए जब रूबी ने अपनी सास के पांव छूने चाहा, तब सास ने रुबी की ओर हाथ बढ़ाया। रुबी ने उनका बढ़ता हाथ देखकर माँ के दिए सोने की गिन्नियों की थैली सास को पकड़ा दी। थैली पकड़ाते समय रूबी को लगा कि सास की हाथ ने रूबी को धक्का दिया। रुबी के माता-पिता ने उसकी विदाई करते समय पहरावनी में दिए जाने वाले नगद रुपयों की जगह सिर्फ रूपयों के कागज दिए थे, जो रुपये रूबी की साइन के बिना नहीं उठाए जा सकते थे और यह खबर रूबी के ससुराल पहुंचने से पहले ही ससुर - जेठ की गाड़ी से वहाँ पहुंच गई थी।

रुबी अपनी माँ के चाय के प्रति क्रोध देखकर कभी चाय न पीती थी। इसलिए ससुराल में जब उसे पहली बार चाय दिया गया, तो उसने पीने से मना कर दिया रुबी कॉलेज जाने से पहले दूध और आने के बाद रस पीती थी। सांस ने कहा - 'सुन बहू, हमारे घर में सब चाय पीते हैं। दूध रस पीना हो, तो अभी बाप के घर चली जा...।'[5] लेकिन सच तो यह है कि सारा घर दूध पीता था और सिर्फ रूबी को दूध नहीं दिया जाता था। यह बात रूबी को बाद में पता चला। बड़ी लड़की का जन्म हुआ, तब रुबी को एनीमिक था खुन बनाने के लिए डॉक्टर ने उसे रोज डेढ़ सेर दूध पीने को कहा। इसलिए रुबी ने सुधीर के हिस्से का दूध पिया। सुधीर दही बिना खाना नहीं खाते थे। इसलिए रूबी को दूध नहीं दिया गया।

4. दांपत्य जीवन में बिखराव – रूबी के पति सुधीर हमेशा एक शांत स्वभाव के व्यक्ति रहे है। उन्होंने कभी अपनी सौतेली मां के विरुद्ध जाकर अपने पत्नी के अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाया। क्योंकि सुधीर जब दो महीने के शिशु थे, तब से उनको सौतेली मां ने उनकी देखभाल की। उस दो महीने के शिशु को उस सौतेली मां ने मातृवत पाला। अपने और सौतेले के बीच कभी फर्क नहीं किया। इसलिए सुधीर हमेशा चुप रहते थे और खासकर किसी विवाद से कोसों दूर भागते थे। माता की नाराजगी भले ही बेवजह हो, पर पत्नी के अधिकारों के लिए उनसे जिरह - वहस करने की अहसान - फरामोशी सुधीर नहीं कर पाए।

एक बार जब रूबी ने उनसे यह प्रश्न पूछा कि -'तुम्हारे परिवार के लोगों के मन में मेरे प्रति प्रेम क्यों नहीं है ? उन लोगों ने मुझे अपना क्यों नहीं माना ? मेरा क्या दोष है, तुम मुझे इतना तो बता दो।'[6] तब सुधीर ने उत्तर दिया 'तुम्हारे में एक नहीं, दो दोष है, जिनके कारण तुम्हें मेरे परिवार का प्यार कभी नहीं मिला। तुम्हारा पहला दोष यह है कि तुम पढ़ी-लिखी हो। औरो की तुलना में तुम अलग हो। दूसरा दोष यह है कि तुम्हारे पास अपना

पैसा है, जो और किसी के पास जमें।'[7]

सुधीर ने सारा जीवन लोगों के लिए घर, फैक्ट्री और पुल बनाने के अपने पेशे में झोंके रखा । वे अपने कामकाज को ज्यादा महत्व देते थे । सुधीर को ढाई सौ रूपये हर महीने काम के मिलते थे, जिसमें आधा रुपया सिगरेट के लिए खर्च होता था । बाकी के खर्च के लिए रूबी कहाँ से पैसे जोड़ती है, इसके बारे में सुधीर ने कभी नहीं सोचा । हर छोटी – बड़ी बातों की शिकायत करना रूबी का स्वभाव नहीं था। इसलिए जब कभी पैसों की जरूरत पड़ती, पिताजी से कहकर बीच–बीच में चेक काटकर रूपए उठा लेती । इतना सब करके भी रुबी को ताने सुनने पड़ते, जो समय बीतने पर भी उसका कष्ट कम नहीं हो पाया । यहाँ तक कि अपने छोटे भाई मुन्ना को उन्होंने कंपनी में अपनी चार आने की हिस्सेदारी तक दे दी ।

सुधीर किसी से कोई दोस्ती यारी नहीं रखते थे, न हि किसी के घर शादी – ब्याह में जाते थे । बड़ी भाभी हमेशा कहती रहती थी 'सुधीर बाबू किसी से कोई दोस्ती यारी रखते नहीं, न कहीं किसी के घर शादी–ब्याह में जाते–आते हैं । इन्हें तो कोई जानता भी नहीं । रुबी तुम्हारी लड़कियों की शादी कैसे होगी, मुझे तो बहुत चिंता होती है ।'[8] इसका परिणाम यह हुआ कि रूबी ने सुधीर को लोगों से मिलाने, दोस्ती करवाने की चेष्टा की, पर सफल नहीं हो पाई । सुधीर के मरने के बाद रूबी को अपनी गलती का अहसास हुआ । रूबी को सुधीर से कोई शिकायत न रहा ।

दूसरी बेटी के जन्म के बाद रूबी में मानसिक रूप से बड़ा परिवर्तन आया । सुधीर ने जब इसकी ओर ध्यान दिया, तब वे सब काम छोड़कर रूबी के इलाज के लिए रांची गये । डॉ .डेविस के मुंह से जब 'सीरियसली इल' सुना तब रूबी के इस हालत का जिम्मेदार सुधीर खुद को मानने लगे । इलाज के दौरान रूबी को कुल सोलह इलेक्ट्रिक शॉक लगाए गये ।

5. वेश्या समस्या– प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने रूबी दी के माध्यम से वेश्या समस्या को दर्शाया है । रूबी दी ने कई बार कालीघाट वाले आदिगंगा के पुल से अलीपुर जाते हुए औरतों को (वेश्याओं) इसी तरह इंतजार करते हुए देखा है, पर वे हमेशा एक झुंड में होती है । अपनी एक सहेली नीना से, जो वेश्याओं के बच्चों के लिए स्कूल चलाती थी, उससे रूबी दी को यह पता चला कि इन वेश्याओं के खड़े होने की जगह तय होती है । धर्मतल्ला, कालीघाट, न्यू मार्केट, बेहाला और ये आद्या कहलाती है । रोज कलकत्ते के आसपास के कस्बों से, आने– जानेवाली ठौर – ठिकाने रहित वेश्याएँ । इस उपन्यास में माया बोस नाम की एक लड़की है जो वेश्या जीवन जीने के लिए मजबूर होती है । उसकी उम्र 35 वर्ष और वह दो सालों से रूबी दी से मिलने परामर्श आती है । माया बोस के पिता एक रिटायर्ड स्कूल मास्टर थे, जब पहली बार माया बहुबाजार में एक मैडम के घर बैठी, तब मास्टरजी समझते कि अस्पताल में डे ड्यूटी करती है मेरी लड़की । उसके बाद वो रात–रात भर घर से बाहर रहती, मास्टर जी सोचते – थिएटर रोड के कास्मोपोलिटन नार्सिंग होम में लड़की नाइट ड्यूटी करती है ।

जब एक बार रूबी दी ने सिलसिला खतम करने के लिए यूंही माया से यह पूछा– तुम शादी क्यों नहीं कर लेती माया ? तब उस दिन माया ने अपने जिंदगी का सबसे काला सच रूबी को बताया 'आठ साल की उम्र में मेरा जीवन नष्ट किया उस आदमी ने। कोई और नहीं, एकदम करीबी रिश्तेदार है वह। घर में रहनेवाला साँप । मैंने शादी कर ली, तो साँप को कौन पालेगा? और मुझे उसने विषकन्या बना दिया रूबी दी, मैं क्या किसी के लायक रह गई । रूबी दी का हलक सूख गया । आज तक जीवन में ऐसा कभी नहीं हुआ कि उनके दिमाग में जो बात आई, उन्हें लगा कि उसे मुँह से निकालने पर सृष्टि में प्रलय हो जाएगा । वे धक–धक करते दिल से माया बोस की ओर निर्निमेष देखती रहीं । माया बोस हँसकर उठ खड़ी हुई । और कौन रूबी दी, मास्टरजी, रूबी दी मास्टरजी । आपको यह कथा मालूम है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा अपनी पुत्री सरस्वती पर मुग्ध हो गए थे । थोड़ा पीना पीएँगी रूबी दी ?'[9]

उस रात रूबी दी ने एक बहुत विचित्र सपना देखा । उन्होंने देखा कि सविता उन्हें एक घर में ले गई जिसमें नंगे ही नंगे लोग भरे थे ,एकदम वस्त्रहीन । उसने रूबी दी से कहा, 'इनसे मिलिए, रूबी दी, ये मेरे पिता हैं । इससे मिलिए, रूबी दी, यह मेरा भाई है ।'[10] उसके बाद रूबी दी को सारी रात एक पल के लिए भी नींद नहीं आई ।

रूबी दी की सहेली नीना ने बताया कि किस तरह सिर्फ कागज पर हवाई रपटें तैयार कर, विदेशी फंड के पैसे पर पलने वाली कितनी संस्थाएँ आए दिन आसपास उग रही है । सब हवाई जहाजों में सफर करते हैं । सेमिनारों में जाने के लिए । किसके पैसे से ? और क्या उनका काम एक भी औरत को वेश्या बनने से रोक सका है ? नीना उदास होकर बताती है 'सब कहती है, नीना दीदी हमें कोई नौकरी दिला दीजिए, तो हम यह काम छोड़ दे । रेट इतने गिरा दिए है ई लड़कियों ने कि दस रुपए तक में काम करने को तैयार है । कभी–कभी एक ग्राहक भी नहीं मिलता पुरे दिन ।'[11]

6. स्त्री शोषण – शेष कादम्बरी उपन्यास में सायरा नामक एक और चरित्र है, जो रूबी दी की नौकरानी है । उसे मुसलमान की जगह क्रिश्चियन बनाने के लिए रूबी सबके सामने उसे सारा कहकर पुकारती है । सायरा एक मंदबुद्धि लड़की थी, फिर भी रुबी को उससे काम करवाने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती, क्योंकि उनके जीवन में सबकुछ तय है । दो साल पहले जब रूबी दी के दोनों पुराने नौकर अलमारी तोड़कर चोरी करके भाग गए थे, तब उनका पुराना परिचित हरफनमौला मनोरंजन व्यापारी सायरा को उनके घर काम करने के आया था । सायरा अपने ही भाई से गर्भवती थी । मनोरंजन ने रूबी दी से कहा– इसे भी लाल सुर्ख गुलाब की कली की तस्वीरवाले डॉक्टरखाने में ले जाकर जान बचाइए । सायरा को रूबी ने रखा । रुबो दी कभी नहीं जान पाई कि क्या सायरा को ऐसा कोई अहसास तक था कि उसके साथ क्या हुआ था और क्या हो सकता था । पहली बार किसी का गर्भवात करवाते समय उनके मन में यह रत्ती भर संदेह नहीं था, कि वे पाप जैसा कुछ कर रही है ।

मनोरंजन को यह पता था कि रुबी दी मुसीवत की मारी लडकियों का गर्भवात करवाने उन्हें मेरी स्टोप्स क्लिनिक ले जाती है । मनोरंजन ने कहा – 'तो और कहा ले जाता, बोलिए ? ले जाइए दूसरी लड़कियों की तरह इस बदनसीब को भी, वहीं लाल सुर्ख गुलाब की कली की – तस्वीर वाले डाक्टरखाने में और इसकी जान बचाइए । एक तो यह खुद ऐसी, ऊपर से भाई का बच्चा पैदा करके इस दुनिया में कैसे रहेगी ? बताइए।'[12]

उपन्यास की और एक पात्र, जिसका नाम सविता है, उसका पति रोज रूसी लडकियों के साथ रात भर बाहर घूमता था । उसकी सास ने भी घर के सारे नौकरों को नौकरी से निकाल दिया । सारा काम सविता अकेली करने लगी परंतु फिर भी सास इसमें नुक्स निकालती रहती । हर बात पर कहती कहाँ से कलकत्तो की यह बेवकूफ हमारे पल्ले पड़ गई । सास ने सविता का जीवन नरक बना दिया था । वह दिन भर काम करती और रात भर रोती रहती थी । धीरे धीरे उसकी तबीयत खराब होने लगी । डॉ. ने जब कहा कि उसे

आराम की जरूरत है तब, सविता को उसकी सास ने कोलकाता भेज दिया। माया बोस के अपने पिता ने ही उसका शारीरिक शोषण किया था। रुबी गुप्ता को भी उनके ससुराल वालों ने मानसिक रूप से, शोषण किया।

7. पारिवारिक जीवन में बिखराव – एक पुराने रईस खानदान की पुत्री होने के कारण रूबी को उस दुनिया में उन लोगों के साथ उठने-बैठने का अधिकार था। परंतु सुधीर के कहने पर 'जिन लोगों के घर से तुम्हारे लिए चाय पानी के बुलावे आते हैं, मैं उनके लिए घर बनाने के लिए तपती धूप में घंटों बाहर खड़ा रहता हूँ, और कोई एक गिलास पानी के लिए भी नहीं पूछता।'[13] रूबी दी ने तुरंत उन लोगों से नाता तोड़ दिया। परंतु बासुमणि की गुड फ्रेंडस सोसाइटी के लिए चंदा इकट्ठा करते-करते वो कब उन लोगों से जुड़ गई, उसे पता तक न चला। गौरी को लगता कि उसकी माँ विशिष्ट वर्ग तक पहुंचने के इच्छा के कारण उन लोगों के साथ जुड़ी है। रूबी ने गौरी से कई बार अपने अनुभवों को साझा किया, जिससे उसे सहानुभूति पा सके,परंतु रुबी का हर कदम उन्हें गोरी से दूर ले जाता या गौरी को एक कदम पीछे हटा देता।

रुबी जितना बाहर की दुनिया के साथ खुलती जाती, सुधीर उतना ही अपने अंदर की दुनिया में धंसते जाते। गौरी की सहानुभूति पिता के साथ थी इसलिए रूबी हमेशा दोषी बन जाती। रूबी दी उनकी निगाहों में दुनिया की शख्सियत थी और वे लोग उस दुनिया से बहुत ऊपर के उठे लोग।

रुबी की भाभी हमेशा यह कहती थी कि सुधीर को तो कोई जानता तक नहीं, तुम्हारे बच्चों की शादी कैसे होगी ? इसलिए रूबी ने सुधीर को बाहर के लोगों से संबंध बढ़ाने, परिचित करवाने में अपनी जी-जान लगा दी थी। परंतु दोनों बेटियों के विवाह से, पूर्व ही सुधीर की मृत्यु हो जाती हैं। गौरी को जब पिता के मृत्यु की खबर मिली तो वह शांतिनिकेतन से आकर कुछ दिन रहकर वापस लौट गई। मां के प्रति उसको कोई सहानुभूति न थी। गौरी से एक दिन अचानक कहा 'तुमने मुझे कभी प्रेम नहीं किया, क्योंकि मैं पापा की तरह सांवली थी। मुझे मां का प्रेम नहीं मिला।'[14] रुबी की छोटी बेटी जया जो हर समय चुप रहती थी , उसने अपने पसंद से शादी की थी। वह अपने पति, जो उससे उम्र में पंद्रह साल बड़ा, था, और कभी दिल्ली के एक विश्वविद्यालय में उसे इतिहास पढ़ाता था, उसी के साथ अमेरिका में बस गई थी और उसके प्रति इस कदर समर्पित थी, कि उसके अलावा दुनिया में उसे कुछ सूझता ही नहीं था। वह अमेरिका से तीन - चार महीने में एक बार फोन करती थी और तब भी उसके पास बताने के लिए कोई बात नहीं होती थी।

8. कामकाजी और घरेलू महिला में द्वंद – एक कामकाजी महिला के लिए सबसे बड़ी समस्या है घर और नौकरी दोनों को संतुलित करना। रूबी दी एक समाज सेविका था। उन्हें कार्यस्थल में अनेक उपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। रूबी दी पहले जिस संस्था से जुड़ी, उसके मालिक का बासुमणि था। उस संस्था का नाम गुड फ्रेंड्स सोसाइटी था। बासुमणि एक प्रतिभासंपन्न व्यक्ति था। बासुमणि क्रिश्चियन था , रूबी रोज वहाँ काम शुरू करने से पहले बाइबिल के किसी हिस्से की रीडिंग मनोयोग से सुनती और उन्हें हमेशा लगता कि बासुमणि, यह सब जानता है। पर पांच साल बाद जब बासुमणि ने रुबी दी को कहा, 'मैंने तुम पर अपने पाँच साल बाद बर्बाद किए'15 तो रूबी दी के दिमाग में एक शंकित मनोभाव उत्पन्न हो गया। बिना किसी कारण बासुमणि का व्यवहार उनके प्रति बदल गया। रुबी को अपनी सहयोगी मानने के बजाय वह प्रतिस्पर्धा मानने लगा। अचानक वह उन पर सब कामों को अपने हाथों में ले लेने की चेष्टा करने का आरोप लगाने लगा। बात पर वह गुस्सा हो जाता। कोई रूबी दी से मिलने की इच्छा प्रकट करता है तो वह आपे से बाहर हो जाता। रूबी दी के हर काम में वह दोष निकालता था। उनके कृष्ण - कृष्ण कहने की आदत से इतनी बुरी तरह चिढ़ता कि उसे छिपा न पाता। अंत में एक दिन नशीली दवाओं के आदि लोगों की मदद के लिए और फंड़ इकट्ठा करने की रूबी दी की सलाह पर उसने कहा- 'तुम्हारे दिमाग में पैसा भरा है। तुम सोचती हो कि पैसे की ताकत से तुम सब काम कर सकती हो।'[16] इसके बाद रूबी, दी ने गुड फ्रेंड्स सोसाइटी को छोड़ दिया ।

रूबी दी में जन्मजात प्रतिभा यह थी कि वह दूसरों के कष्ट को भाप लें, उन्हें समझ सके और शांति, सांत्वना और संबल दे सके। उनमें कुछ ऐसा था कि उनके पास आने वाला हर व्यक्ति, राहत महसूस करता था। परंतु अपने जन सेवा के चलते रूबी दी का परिवार दूर होता गया। उनके इस प्रतिभा से उनका अपना परिवार अवगत न था। बड़ी बेटी गौरी के बड़े होते जाने के साथ साथ उनका आपस का तनाव इस कदर बढ़ता गया कि हर क्षण ऐसा लगा लगता है कि वे लोग एक अंदर से धधकते हुए ज्वालामुखी पर बैठे हैं और वह किसी भी, क्षण फूट पड़ेगा। रूबी दी जितना बाहर की दुनिया के साथ खुलती जाती, अपने काम में व्यस्त होती जाती, सुधीर उतना ही अपने अंदर की दुनिया में धंसते जाते गौरी की सहानुभूति पिता के साथ थी, शायद इसलिए रूबी दी दोषी बन जाती। गोरी और सुधीर की दृष्टि में रूबी दी का काम करना दुनिया की कृपादृष्टि पाने के लिए था। रूबी दी उन्हें समझाना चाहती थी पर असफल रही।

9. वैवाहिक धोखाधड़ी– रूबी दी के पास एक दिन मटियाबुर्ज के यासीन अली की लड़की का केस आया। यासीन के पिता रहमान सुधीर के बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज के दिनों से गहरे दोस्त थे। गौरी और यासीन का जन्म एक ही दिन हुआ था, इसी कारण रूबी यासीन को बहुत स्नेह करती थी। यासीन ने अपनी 19 साल की इकलौती बेटी फरहा की शादी जिस लड़के से की थी वह नामर्द था। इसके बारें में फरहा को शादी के छ महीने बाद पता चला। तब से उसके माता-पिता दोनों बेटी के लिए परेशान हो गये। लड़के की बीमारी मनोवैज्ञानिक था, वह रात रात भर रोता रहता था। उसके इलाज के लिए प्रयत्न बहुत किये गए परंतु नतीजा नहीं निकला। पता चला कि लड़के के पहले कई औरतों से ताल्लुकात रह चुके हैं और यह सब उसी का परिणाम है। लड़के के घरवालों ने जानता - बुझते उनकी लड़की को फंसाया है।

अपने माता-पिता के उपदेश के अनुसार फरहा ने भी तलाक को स्थिति से निकलने का एक मात्र रास्ता समझा। परंतु फरहा के ससुराल वाले उसे मायके नहीं भेज रहे थे। किसी तरह उसके ममेरे भाई की शादी का बहाना बनाकर यासीन ने अपनी बेटी को लगभग अपहरण कर लिया और घर ले आया। पर अचानक फरहा ने तलाक देने से मना कर दिया। अपनी बेटी को समझाने के लिए यासीन ने उसे रूबी दी के पास लेकर आया। फरहा ने रूबी दी से कहा कि अगर मुझे कोई बीमारी होती तो क्या वे भी मुझे छोड़ देते।

रूबी ने उसे समझाने की कोशिश में कहा 'तुम्हारे प्रेम की बुनियाद एक धोखे पर खड़ी है बेटी ! इसे भूलकर मत सोचो और जिसे तुम प्रेम समझ रही हो क्या वह वैसा ही एक लगाव नहीं है जो एक पाली हुई बिल्ली या तोते से।'[17]

परंतु फरहा फिर भी अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती थी। रूबी दी ने समझाया कि तुम्हारे पिता तुम्हारे साथ है, उन्हें जमाने की कोई चिंता नहीं।

नहीं तो हमारे देश में ज्यादातर लड़कियां ऐसे हालात में मजबूरी में सबकुछ बर्दाश्त कर सारी जिन्दगी गुजार देती है। रूबी दी ने सुबकते फरहा को दिलासा देने का प्रयास किया।

निष्कर्ष – शेष कादम्बरी उपन्यास का तात्विक विवेचन और विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि इसमें नारी जीवन की त्रासदी के सभी तत्व विद्यमान है। ऐसे में कहा जा सकता हैं कि यह उपन्यास निश्चित रूप नारी जीवन की समस्याओं पर आधारित उपन्यास है। यह पाठकों को नारी जीवन की समस्याओं के बारें में विस्तृत वर्णन प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अलका सरावगी, शेष कादम्बरी, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ सं 28
2. वही, पृष्ठ संख्या 30
3. वही, पृष्ठ संख्या 77
4. वही, पृष्ठ संख्या 75
5. वही, पृष्ठ संख्या 76
6. वही, पृष्ठ संख्या 78
7. वही, पृष्ठ संख्या 78
8. वही, पृष्ठ संख्या 88
9. वही, पृष्ठ संख्या 66
10. वही, पृष्ठ संख्या 66
11. वही, पृष्ठ संख्या 64
12. वही, पृष्ठ संख्या 23
13. वही, पृष्ठ संख्या 104
14. वही, पृष्ठ संख्या 108
15. वही, पृष्ठ संख्या 37
16. वही, पृष्ठ संख्या 38
17. वही, पृष्ठ संख्या 155
18. Inspire - Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
19. https://www.drmullaadamali.com

****